SJIF 2014 = 3.189
ISSN: 2348-3083
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

उच्च माध्यमिक स्तर पर भूगोल पाठ्यक्रम की समालोचना

मनीषा पालीवाल[1], डॉ मुरलीधर मिश्रा[2] & डॉ वन्दना गोस्वामी[3]

[1]शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, राजस्थान
[2]एसोशिएट प्राफेसर,, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, राजस्थान
[3]डीन, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली, राजस्थान

Abstract

विगत दो दशकों की क्रान्तिपरक प्रगति के आधार पर भूगोल, कला एवं विज्ञान दोनों संकायों का महत्वपूर्ण विषय बन चुका है, वर्तमान में लिपिक वर्ग से लेकर भारतीय प्रशासनिक सेवा तक की प्रतियोगी परीक्षाओं में भूगोल विषय का चयन एक आधारभूत विषय के रूप में किया जाता है, अतः भूगोल विषय के पाठ्यक्रम को शोध कार्यों की कसौटी का परख कर ही प्रस्तुत करना चाहिए। वर्तमान समय की शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर उद्देश्यों का चयन, विषय वस्तु का चयन एवं गठन विषयवस्तु में क्रमबद्धता सततता व एकीकरण का समन्वय संतुलन ज्ञात कर अधिगम अनुभवों के मूल्यांकन पर आधारित शैक्षिक आवश्यकताओं का निर्धारण करते रहने के क्रम में पाठ्यक्रम विकास की एक चक्रीय व्यवस्था आवश्यक है। इस प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 12 के भूगोल पाठ्यक्रम का समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

पाठ्यचर्या का महत्वपूर्ण बौद्धिक उपकरण पाठ्यक्रम है। पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या की एक भौतिक संरचना है, जिसके द्वारा शिक्षक एवं छात्रों को दिशा निर्देश प्रदान किए जाते है तथा अवस्था विशेष के लिए विषय के उद्देश्यों का वर्णन किया जाता है, वर्णित उद्देश्यों के अनुरूप विषयवस्तु की प्रकृति निर्धारित की जाती है तथा किस प्रकार संसाधानों के प्रबन्धन से उद्देश्यों की प्राप्ति की विस्तार से स्पष्ट किया जाता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम अनुदेशन का व्यवस्थित, संगठित एवं औपचारिक दस्तावेज अथवा

प्रारूप है जिसमें अनुदेशन के उद्देश्य, विषयवस्तु की प्रकृति का संक्षिप्त विवरण, क्रियाएं, कालांश, अंकभार, मूल्यांकन प्रक्रिया का निर्देश प्रस्तुत किया जाता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या प्रारूप NCF Position Poper Vol II (2009) के अनुसार पाठ्यक्रम एक स्तर विशेष हेतु निर्धारित विशेष उद्देश्यों के अनुसार विषय विशेष में प्रदान करने वाली सम्पूर्ण विषय वस्तु का ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति का विकास करने में सहायक है। पाठ्यक्रम से तात्पर्य किसी कार्यक्रम में सम्मिलित प्रकरणों का सारांश या रूपरेखा होती है जिसे सामान्यतः माध्यमिक शिक्षा बोर्ड या शिक्षण करने वाले शिक्षक द्वारा निर्मित किया जाता हैं यह विद्यार्थी एवं अनुदेशक के मध्य परस्पर समझ का आधार बनता है। आदर्श मदान (1995) के अनुसार पाठ्यक्रम शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण साधन है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम का विशेष स्थान है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, समय के बढ़ते कदम के साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप ही अपने पाठ्यक्रम निर्माण में अग्रणी बोर्डों में से एक रहा है। वर्तमान में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर द्वारा माध्यमिक शिक्षा के दो मुख्य स्तरों– माध्यमिक और उच्च माध्यमिक में विकसित किया गया है। शिक्षा का उच्च माध्यमिक स्तर महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह विद्यार्थियों को विषय चयन करने का विकल्प देता है। भूगोल विषय उच्चतर माध्यमिक स्तर पर एक वैकल्पिक विषय के रूप में समाविष्ट किया गया है, दस वर्ष की सामान्य शिक्षा के उपरान्त विद्यार्थी इस स्तर के प्रारम्भ होने पर विभिन्न शाखाओं में बंट जाते हैं तथा पहली बार उनका परिचय विषय की विशेषताओं और कठिनाईयों से होता है। ऐसे में एक उचित व संतुलित पाठ्यक्रम की अति आवश्यकता है। पाठ्यक्रम का आकल्पन करते समय आकल्पनकर्ता के समक्ष एक महत्वपूर्ण मुद्दा यह होता है कि आकल्पन के प्रत्येक पक्ष को उपयुक्त महत्व दें, ताकि कहीं भी असंतुलन न हो।

ओम प्रकाश सिंगाठिया (2004) के अनुसार ''पाठ्यक्रम तैयार करने का कार्य तलवार की धार पर चलने के समान है।''

NCF (2005) के अनुसार ''वृहत और विशाल पाठ्यक्रम को पूरा करने के दबाव में सीखने के कई पहलुओं का पूरी तरह उपयोग नहीं किया जाता। जिससे अधिगम का बहुत अहित होता है।''

किसी भी विषय का पाठ्यक्रम उस विषय के अनुदेशनात्मक उद्देश्यों से किस हद तक साम्य स्थापित करती है ? पाठ्यक्रम की विषयवस्तु कितनी संतुलित है ? इत्यादि प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने हेतु अनेक शिक्षाविदों ने अनेकविध अनुसंधान कार्य किए है, जो इस प्रकार है– **ललितम्मा (1981)** के अध्ययन का उद्देश्य केरल राज्य में माध्यमिक कक्षाओं के आधुनिक गणित में (1973) पुनरावृत्ति पाठ्यक्रम के परिणाम स्वरूप प्रारम्भ की गयी पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन करना था। **बसु (1983)** ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्दिष्ट पाठ्यक्रमों को राष्ट्रीय एकता उन्नयन के संदर्भ में विश्लेषित किया। **गुप्ता (1983)** ने हिमाचल प्रदेश के सामाजिक अध्ययन विषय के पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं, लक्ष्यों व उद्देश्यों, पाठ्यक्रम की विषयवस्तु, विधियों, तकनीकों, उपयुक्त शिक्षण सामग्री, मूल्यांकन एवं आव्यूह आदि के संदर्भ में समालोचनात्मक अध्ययन किया। **महापात्रा (1990)** ने उड़ीसा में माध्यमिक विद्यालय के

गणित पाठ्यक्रम का समालोचनात्मक अध्ययन किया। **देशपाण्डेय (1992)** ने महाराष्ट्र राज्य के माध्यमिक स्तर के गणित पाठ्यक्रम का समालोचनात्मक अध्ययन किया। **सिंह (1994)** ने 'तर्कगणितीय प्रबन्धन' पाठ्यक्रम का इसके विषयवस्तु शिक्षण शास्त्र एवं मूल्यांकन के संदर्भ में अध्ययन किया। **भारती (2000)** ने उच्च माध्यमिक स्तर पर गृह विज्ञान पाठ्यक्रम का समालोचनात्मक विश्लेषण किया। **नाईक (2002)** ने उड़ीसा में माध्यमिक स्तर पर नवीन विज्ञान पाठ्यक्रम का समालोचनात्मक अध्ययन किया। **साकरिया (2006)** ने पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित वाणिज्य विषय का नवीन पाठ्यक्रम का अध्ययन किया।

उपर्युक्त शोध सारांशों के अध्ययन एवं विश्लेषण से ज्ञात होता है कि यह अध्ययन अलग अलग राज्यों में विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम के विश्लेषण पर आधारित है, परन्तु भूगोल पाठ्यक्रम से शोध कार्य ज्ञात नहीं हो रहे। भूगोल विषय का योगदान अपनी विषयवस्तु संज्ञान प्रक्रियाओं, कुशलताओं और उन मूल्यों में निहित है, जिनको यह प्रोत्साहित करता है।

इस प्रकार यह संसार के पर्यावरणीय और सामाजिक आयामों के अन्वेषण, समझ और मूल्यांकन में विद्यार्थियों का सहयोगी है, भूगोल मानव उसके पर्यावरण के अन्तर्सम्बन्धों की खोज करता है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर भूगोल पाठ्यक्रम के संदर्भ मे अनेक प्रश्न उठते है –

- क्या उच्च माध्यमिक स्तर पर कक्षा 12 के भूगोल पाठ्यक्रम में सम्मिलित सम्प्रत्ययों का क्षेत्र पर्याप्त है ?
- क्या उच्च माध्यमिक स्तर पर कक्षा 12 में भूगोल विषय के किन्हीं दो सम्प्रत्ययों के मध्य समतल (Horizontal) सम्बन्ध है ?
- क्या उच्च माध्यमिक स्तर पर कक्षा 12 में भूगोल विषय के सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक पक्ष के मध्य एकीकरण है ?
- क्या उच्च माध्यमिक स्तर पर कक्षा 12 के भूगोल पाठ्यक्रम के सम्प्रत्ययों में पर्याप्त क्रमबद्धता है?
- क्या उच्च माध्यमिक स्तर पर कक्षा 12 के भूगोल पाठ्यक्रम के सम्प्रत्ययों का आवश्यकतानुसार पुनर्प्रकटीकरण हुआ है ?
- क्या उच्च माध्यमिक स्तर पर कक्षा 12 के भूगोल पाठ्यक्रम के सम्प्रत्ययों के व्यवस्थापन में ज्ञान की गहनता को ध्यान में रखा गया है ?
- उच्च माध्यमिक स्तर पर कक्षा 12 के भूगोल शिक्षक भूगोल पाठ्यक्रम के सम्प्रत्ययों के क्षेत्र, एकीकरण, क्रमबद्धता, सततता व संतुलन के विषय में भूगोल शिक्षक किस प्रकार की प्रतिक्रिया रखते हैं ?

अतः उपर्युक्त प्रश्नों के आधार पर एक वृहद् प्रश्न उभरता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर भूगोल पाठ्यक्रम किस प्रकार का है ? इन सभी प्रश्नों के उत्तर जानने हेतु शोधकर्त्री द्वारा अग्रांकित शोध समस्या का चयन किया गया है।

शोध समस्या

उच्च माध्यमिक स्तर पर कक्षा 12 के भूगोल पाठ्यक्रम का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

(1) उच्च माध्यमिक स्तर पर कक्षा 12 के भूगोल पाठ्यक्रम में सम्प्रत्ययों के क्षेत्र, एकीकरण, क्रमबद्धता में समन्वयन व संतुलन का अध्ययन करना।

(2) भूगोल पाठ्यक्रम के प्रति भूगोल शिक्षकों की प्रतिक्रिया का अध्ययन करना।

प्राकल्पना

(1) उच्च माध्यमिक स्तर पर भूगोल पाठ्यक्रम में सम्प्रत्ययों का क्षेत्र, एकीकरण, क्रमबद्धता व सततता की दृष्टि से समन्वित तथा संतुलित है।

(5) उच्च माध्यमिक स्तर पर भूगोल पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षकों की प्रतिक्रिया सकारात्मक है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में उपरोक्त उद्देश्य के सम्बन्ध में विशिष्ट सूचनाओं के संकलन हेतु माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा निर्धारित कक्षा 12 के भूगोल पाठ्यक्रम का सोद्देश्य विधि से चयन किया गया। शिक्षकों की प्रतिक्रिया ज्ञात करने हेतु माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर से सम्बद्ध राजकीय एवं निजी विद्यालयों में उच्च माध्यमिक स्तर पर ऐच्छिक विषय के रूप में भूगोल अनुदेशन से सम्बद्ध 100 शिक्षकों का चयन न्यादर्श की सोद्देश्य विधि से किया गया है।

प्रदत्तों के स्रोत

प्रस्तुत अध्ययन में अंग्रांकित स्रोतों से प्रदत्त प्राप्त किए गए हैं–

(1) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर कक्षा 12 के स्तर पर भूगोल विषय के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम।

(2) उच्च माध्यमिक स्तर पर भूगोल विषय के सम्बद्ध शिक्षक।

प्रदत्तों की प्रकृति

उच्च माध्यमिक स्तर पर भूगोल पाठ्यक्रम का विषयवस्तु विश्लेषण से प्राप्त प्रदत्त वर्णनात्मक एवं गुणात्मक प्रकृति के है। भूगोल पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षकों की प्रतिक्रिया सम्बन्धी प्रदत्त मात्रात्मक एवं गुणात्मक प्रकृति के है।

प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण

पाठ्यक्रम विषयवस्तु विश्लेषण हेतु प्रपत्र – उच्च माध्यमिक स्तर पर भूगोल की पाठ्यक्रम से सम्बन्धित प्रदत्तों के संकलन हेतु विषयवस्तु विश्लेषण प्रपत्र का निर्माण किया गया। इसमें पाठ्यक्रम का अध्ययन

कक्षा 12 के मुख्य सम्प्रत्ययों का चयन कर निर्मित पदों (क्षेत्र, एकीकरण, क्रमबद्धता, सततता) तथा इनके उपपदों में सम्प्रत्ययों को रख कर पाठ्यक्रम विषयवस्तु विश्लेषण के आधार पर समन्वयन व संतुलन ज्ञात किया गया।

शिक्षक प्रतिक्रिया हेतु प्रपत्र – प्रस्तुत प्रपत्र, कक्षा 12 के भूगोल पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षकों प्रतिक्रिया ज्ञात करने के लिए निर्मित किया गया है। भूगोल पाठ्यक्रम के विषयवस्तु विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर प्रतिक्रिया प्रपत्र के कक्षा 12 के लिए विभिन्न पदों का निर्माण किया गया तथा सहमति व असहमति के आधार पर प्रतिक्रिया ज्ञात करने हेतु प्रतिक्रिया प्रपत्र द्वारा भूगोल पाठ्यक्रम के प्रति भूगोल शिक्षकों की प्रतिक्रिया ज्ञात की गई है।

शोध अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया

प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर पर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर के अन्तर्गत संचालित कक्षा 12 के भूगोल विषय के पाठ्यक्रम का विश्लेषण करने हेतु विषयवस्तु विश्लेषण तथा शिक्षकों की प्रतिक्रिया ज्ञात करने हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। यदि समग्र रूप से कहें तो समन्वित उपागम (Electic Approach) या मिश्रित उपागम का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 12 के लिए भूगोल विषय के निर्धारित पाठ्यक्रम के हिन्दी संस्करण का संकलन कर प्रस्तुत भूगोल पाठ्यक्रम का गहन अध्ययन किया गया। पाठ्यक्रम के गहन अध्ययन के उपरान्त विश्लेषण प्रपत्र का निर्माण किया गया। विषयवस्तु विश्लेषण प्रपत्र की सहायता से भूगोल की विषयवस्तु के सम्प्रत्ययों का चयन कर क्षेत्र, एकीकरण, क्रमबद्धता, सततता तथा समन्वयन एवं संतुलन को ज्ञात किया गया है। आरम्भिक विश्लेषण से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर भूगोल पाठ्यक्रम के प्रति विशेषज्ञों की प्रतिक्रिया जानने हेतु प्रतिक्रिया प्रपत्र का निर्माण किया गया तथा विशेषज्ञों की प्रतिक्रिया द्वारा प्रदत्तों का संग्रहण किया गया। इस प्रकार आरम्भिक विश्लेषण तथा प्रतिक्रिया प्रपत्र से प्राप्त प्रदत्तों का समाकलित विश्लेषण व व्याख्या कर निष्कर्ष प्राप्त किया गया।

अध्ययन की परिसीमाएं

(1) उच्च माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा कक्षा 12 के निर्धारित पाठ्यक्रम को अध्ययन का आधार बनाया गया।

(2) अध्ययन में सत्र 2010–11 के निर्धारित पाठ्यक्रम को ही अध्ययन हेतु चयनित किया गया है।

कक्षा 12 के भूगोल पाठ्यक्रम का विश्लेषण

कक्षा 12 के पाठ्यक्रम का विश्लेषण चार आधारों– क्षेत्र, एकीकरण, क्रमबद्धता, सततता में समन्वयन एवं संतुलन को कसौटी मानकर किया गया है।

कक्षा 12 के भूगोल पाठ्यक्रम का विश्लेषणः एक नज़र में

क्र	आधारभूत	क्षेत्र	एकीकरण	क्रमबद्धता	सततता	समन्वयन

	मूल सम्प्रत्यय	उपयुक्तता		अनुपयुक्तता		पर्याप्तता		अपर्याप्तता		अधिकता		कमी		विषय के दो सम्प्रत्यय में		सैद्धान्तिक व प्रायोगिक		अन्य विषयों के साथ		ज्ञात से अज्ञात		सरल से जटिल		पूर्ण से अंश		कालक्रम के क्रम में		पुनर्प्रकटीकरण		ज्ञान की गहनता		एवं संतुलन	
		उप.		अनु.		पर्या.		अप.		अ.		कमी		हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं	हाँ	नहीं
1	मानव भूगोल	√				√								√				√		√		√		√				√		√		√	
2	जनसंख्या (विश्व के लोग)	√				√								√		√		√		√		√		√		√		√		√		√	
3	मानव क्रियाकलाप	√				√								√		√		√		√		√		√				√		√		√	
4	परिवहन	√				√								√				√		√		√		√		√		√		√		√	
5	संचार	√				√								√				√		√		√		√		√		√		√		√	
6	व्यापार	√				√								√		√		√		√		√		√		√		√		√		√	
7	मानवबस्तियाँ	√				√								√				√		√		√		√				√		√		√	
8	जनसंख्या (भारत के लोग)	√				√								√		√		√		√		√		√		√		√		√		√	
9	मानव बस्तियाँ	√				√								√				√		√		√		√				√		√		√	
10	संसाधन	√				√								√		√		√		√		√		√				√		√		√	
11	परिवहन	√				√								√				√		√		√		√		√		√		√		√	
12	संचार	√				√								√				√		√		√		√		√		√		√		√	
13	अंतर्राष्ट्रीय व्यापार	√				√								√		√		√		√		√		√		√		√		√		√	
14	भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में चयनित मुद्दे और समस्याएँ	√				√								√		√		√		√		√		√		√		√		√		√	
15	आंकड़ों का संकलन	√				√								√		√		√		√		√		√		√		√		√		√	
16	थिमैस्टिक मानचित्र	√				√								√		√		√		√		√		√		√		√		√		√	
17	क्षेत्र अध्ययन	√				√								√		√		√		√		√		√		√		√		√		√	
18	स्थानिक सूचना प्रौद्योगिकी	√				√								√		√		√		√		√		√		√		√		√		√	

अ. क्षेत्र के आधार पर कक्षा 12 के पाठ्यक्रम का विश्लेषणात्मक विवेचना

प्रस्तुत पाठ्यक्रम के सम्प्रत्ययों का अध्ययन विभिन्न आयामों– उपयुक्तता / अनुपयुक्तता, पर्याप्तता / अपर्याप्तता, अधिकता / कमी के आधार पर विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि विश्व के संदर्भ में जनसंख्या (लोग), मानव क्रियाकलाप, परिवहन, संचार, व्यापार मानव बस्तियां तथा भारतीय संदर्भ में भी उन्हीं सम्प्रत्ययों तथा भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में चयनित मुद्दें व समस्याएं एवं प्रायोगिक पक्ष में आंकड़ों का

संकलन, थिमैटिक मानचित्र, क्षेत्र अध्ययन, स्थानिक सूचना प्रौद्योगिक आदि उपयुक्त है तथा पर्याप्त है। अधिकता व कमी नहीं है। अतः क्षेत्र उचित प्रतीत होता है।

ब. एकीकरण के आधार पर कक्षा 12 के पाठ्यक्रम का विश्लेषणात्मक विवेचना

एकीकरण के तीन आधारों– विषय के दो सम्प्रत्ययों के मध्य एकीकरण, सैद्धान्तिक व प्रायोगिक एकीकरण, अन्य विषयों के साथ एकीकरण ज्ञात करने पर स्पष्ट होता है कि विश्व व भारत के संदर्भ में जनसंख्या व जनसंख्या घनत्व में समतल सम्बन्ध है, परिवहन में स्थल, जल, वायु परिवहन, तेल और गैस पाइप लाइन मानव बस्तियों ग्रामीण व नगरीय बस्तियों में एवं प्रायोगिक कार्य में विभिन्न प्रकार के आरेखों– दण्ड, वृत्त और प्रवाह आरेख में जनसंख्या के वितरण, घनत्व, वृद्धि, संघटन, प्रवाह के संदर्भ में जनसंख्या के सम्बन्धित सांख्यिकी, औसत की गणना, केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप और कोटि सहसम्बन्ध द्वारा प्रायोगिक व सैद्धान्तिक पक्ष में एकीरकण है।

अन्य विषयों के साथ एकीरकण में जनसंख्या के मुद्दें जनांकिकी विषय से, भारतीय कृषि का कृषि विज्ञान से व्यापार व आर्थिक क्रियाओं का अर्थशास्त्र से, नगरीय व ग्रामीण अधिवास का समाज शास्त्र से, प्रायोगिक–आंकड़ों का गणित से एकीकरण हैं।

स. क्रमबद्धता के आधार पर कक्षा 12 के पाठ्यक्रम का विश्लेषण

पाठ्यक्रम के सम्प्रत्ययों के मध्य क्रमबद्धता के अन्तर्गत चार आधारों, ज्ञात से अज्ञात, सरल से जटिल, पूर्ण से अंश व कालक्रमानुसार क्रमबद्धता ज्ञात करने पर स्पष्ट होता है कि विश्व व भारत के संदर्भ में जनसंख्या तथा जनसंख्या वितरण, घनत्व, परिवहन के विभिन्न प्रकार, मानव बस्तियों के प्रकार, भारत में क्षेत्र, नियोजन, प्रायोगिक कार्य में आंकड़ों का स्थानिक तुलना का संकलन ज्ञात से अज्ञात क्रम में है। जनसंख्या के मानव विकास, आर्थिक क्रियाओं के विभिन्न पक्ष, उद्योग में औद्योगिक अवस्थिति, उदारीकरण, निजीकरण विकास ने सतत पोषण विकास, संचार से साइबर स्पेस प्रायोगिक कार्य में आंकड़ों औसत से गणना, केद्रीय प्रवृत्ति, कोटि सहसम्बन्ध सरल से जटिल क्रम में प्रस्तुत है।

पूर्ण से अंश क्रम में विश्व व भारत के संदर्भ में जनसंख्या, जनसंख्या वितरण, घनत्व, वृद्धि को पूर्ण से अंश क्रम में प्रस्तुत कया है। प्रायोगिक कार्य में आंकड़ों का संधानन और थिमैटिक मानचित्रण क्रिया है। मानव बस्ती को छोड़कर सभी सम्प्रत्ययों को उचित क्रम में दिया गया है।

कक्षा 12 में भूगोल विषय के मानव भूगोल के पक्ष को प्रस्तुत किया गया है। इसके तथ्यों को भारत व विश्व के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया हैं जहां मानव जनसंख्या का उल्लेख हो वहां कालक्रम की प्रस्तुति स्वाभाविक हैं विश्व के संदर्भ– में– जनसंख्या वितरण, घनत्व, वृद्धि जनगणना के आंकड़ों के आधार पर इसके सभी सम्प्रत्यय, उद्योगों का विकास, WTO की स्थापना, भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में चयनित मुद्दे और समस्याओं को क्या प्रायोगिक कार्य में आंकड़ों को कालक्रमानुसार प्रस्तुत किया गया है, अतः प्रस्तुत पाठ्यक्रम में क्रमबद्धता विद्यमान है, केवल मात्र मानव भूगोल के मूल सिद्धान्त के अन्तर्गत बस्तियों को क्रमानुसार प्रस्तुत नहीं किया गया है।

द. सततता के आधार पर कक्षा 12 के पाठ्यक्रम का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सम्प्रत्ययों के पुनर्प्रकटीकरण व ज्ञान की गहनता के आधार पर सततता ज्ञात करने पर स्पष्ट होता है कि विश्व तथा भारतीय जनसंख्या के सभी आयामों, वितरण व घनत्व आदि पर भौतिक पक्ष का प्रभाव अवश्यमेव आएगा, जनसंख्या संघटन का मानव विकास में विकास का मानव क्रियाकलाप में, पविहन संचार और व्यापार में तृतीयक क्रियाकलाप का पुनर्प्रकटीकरण हो रहा है।

प्रायोगिक कार्य में जनसंख्या व आर्थिक क्रियाओं के आंकड़ों का पुनर्प्रकटीकरण हो रहा है। फलस्वरूप ज्ञान की गहनता में बढ़ोतरी हो रही है। अतः सततता ज्ञात हो रही है।

य. कक्षा 12 के पाठ्यक्रम का समन्वय एवं संतुलन के आधार पर विश्लेषण

समन्वय एवं संतुलन से तात्पर्य चयनित आधारों (क्षेत्र, एकीकरण, क्रमबद्धता व सततता) के समन्वय एवं संतुलन से है। पाठ्यक्रम में समन्वयन व संतुलन ज्ञात करने पर स्पष्ट होता है कि विश्व व भारतीय संदर्भ की विभिन्न आर्थिक क्रियाएं, संसाधन, व्यापार, परिवहन, संचार और प्रायोगिक पक्ष के आंकड़ों, आरेखों, मानचित्रों व क्षेत्रीय अध्ययन आदि का क्षेत्र, उपयुक्त व पर्याप्त है। अधिकता व कमी प्रदर्शित नहीं हो रही। एकीकरण ज्ञात करने पर स्पष्ट होता है कि आर्थिक क्रिया कलाप में, प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक व चतुर्थक क्रिया कलापों में एकीकरण प्रदर्शित है। मानव बस्तियों में नगरीय व ग्रामीण बस्तियों में एकीकरण है। विश्व या भारत की जनसंख्या के संदर्भ में जनसंख्या वितरण, घनत्व व वृद्धि आदि सम्प्रत्ययों के सैद्धान्तिक पक्ष का प्रायोगिक कार्य से एकीकरण है। भूगोल विषय के सम्प्रत्ययों का कला व विज्ञान संकाय के अन्य सभी विषयों से एकीकरण है। जनसंख्या का जनांकिकी विषय से, आर्थिक क्रियाओं का अर्थशास्त्र से, उद्योगों का आर्थिक पक्षों से मानव बसाव व अधिवासों का समाजशास्त्र से सम्बन्ध है, अतः स्पष्ट है कि पाठ्यक्रम के सम्प्रत्ययों में एकीकरण है। क्रमबद्धता के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विश्व की जनसंख्या व उसके आर्थिक पक्ष से सम्बन्धित मानव के आर्थिक क्रियाकलाप परिवहन व संचार, व्यापार भी क्रमबद्ध रूप में है। केवल मानव बस्तियां क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत नहीं है। भारतीय संदर्भ में भारत की जनसंख्या मानव बस्तियाँ तदोपरान्त विभिन्न प्रकार के संसाधन जैसे– भूमि, जल, खनिज व ऊर्जा संसाधन तथा भारतीय उद्योग व परिवहन संचार, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया है।

सततता के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मानव भूगोल के मूल सिद्धांत से सम्बन्धित पक्ष में भौतिक भूगोल के मूल सिद्धान्त की विषयवस्तु का पुनर्प्रकटीकरण हो रहा है। भारत के संदर्भ भी में जनसंख्या, मानव बस्तियां, संसाधन और विकास, परिवहन, संचार और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, सम्प्रत्ययों का तथा प्रायोगिक पक्ष के आंकड़ों के आधार पर इनका पुनर्प्रकटीकरण हो रहा है, फलस्वरूप ज्ञान की गहनता बढ़ रही है। अतः प्रस्तुत वर्णन में क्षेत्र उपयुक्त व पर्याप्त है। एकीरकण सततता भी है, केवल क्रमबद्धता में मानव बस्तियां उचित क्रम में प्रस्तुत नहीं है। इन सभी आधारों से स्पष्ट होता है कि पाठ्यक्रम में समन्वयन तथा संतुलन है। इसे और अधिक समृद्ध करना अपेक्षित है।

शोध अध्ययन के सुझाव

(1) प्रस्तुत अध्ययन उच्च माध्यमिक स्तर पर भूगोल पाठ्यक्रम के विश्लेषण पर आधारित हैं इसी प्रकार अन्य विषयों के पाठ्यक्रमों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

(2) प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर के अन्तर्गत भूगोल पाठ्यक्रम का अध्ययन किया गया है। इसी प्रकार का अध्ययन, राजस्थान ओपन स्कूल बोर्ड द्वारा संचालित भूगोल पाठ्यक्रम के संदर्भ में किया जा सकता है।

(3) प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर पर भूगोल पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षकों (विशेषज्ञों) की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया गया। इसी प्रकार उच्च माध्यमिक स्तर पर भूगोल पाठ्यक्रम के प्रति शिक्षार्थियों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन भी किया जा सकता हैं

(4) प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा 11 व 12)का समग्र रूप में है, इस स्तर के भूगोल पाठ्यक्रम का कक्षा 11 व 12 के पाठ्यक्रम का पृथक–पृथक अध्ययन किया जा सकता हैं।

शैक्षिक निहितार्थ

(1) प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर पर भूगोल पाठ्यक्रम के विश्लेषण का पाठ्यक्रम के सम्प्रत्ययों में क्षेत्र, एकीकरण, क्रमबद्धता, सततता के आधार पर समन्वयन व संतुलन के ज्ञात किए गए मान्य पा व कतिपय कमियों के आधार पर पाठ्यक्रम निर्मात्री समिति द्वारा पाठ्यक्रम में सुधार कर पाना संभव होगा। जिससे पाठ्यक्रम की गुणवत्ता में सुधार होगा।

(2) NCERT द्वारा मान्यता प्राप्त उच्च माध्यमिक स्तर की भूगोल पाठ्यक्रम न केवल राजस्थान बोर्ड द्वारा पंजीकृत है, अपितु सम्पूर्ण देश के विभिन्न राज्यों में उसी को लागू किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन से एनसीईआरटी सदस्यों को पाठ्यक्रम की वास्तविक स्थिति को ज्ञात करने में सहायता मिलेगी एवं विभिन्न राज्यों में एन.सी.ई.आर.टी. के पाठ्यक्रम में आवश्यकतानुसार परिवर्तन हेतु दिशा निर्देश ज्ञात होंगे।

(3) पाठ्यक्रम के अधिगमात्मक बनाने हेतु शिक्षकों का निर्मात्री समिति को उचित दिशा प्राप्त होगी।

(4) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर के भूगोल विषय के पाठ्यक्रम को वर्तमान के मांग के आधार पर पुनर्गठन की प्रेरणा प्राप्त हो सकेगी।

(5) शिक्षाविदों एवं भूगोलवेत्ताओं के नवाचारों को प्रस्तुत शोध कार्य पाठ्यक्रम में समावेश हेतु नवीन आयाम प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा।

शोध निष्कर्ष

उच्च माध्यमिक स्तर पर कक्षा 12 के पाठ्यक्रम में सम्प्रत्ययों का क्षेत्र उपयुक्त व पर्याप्त ज्ञात हो रहा है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में एकीकरण व सततता है। अधिकांश सम्प्रत्यय क्रमबद्ध है परन्तु मानव बस्तियाँ सम्प्रत्यय क्रमबद्ध रूप में नहीं हैं इसे जनसंख्या के साथ ही प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। अतः क्रमबद्धता को व्यवस्थित करने की आवश्यकता है। क्षेत्र, एकीकरण, सततता, क्रमबद्धता में समन्वय व संतुलन ज्ञात हो रहा है। उसे समृद्ध करना अपेक्षित है। विशेषज्ञों के अनुसार ही पाठ्यक्रम की विषयवस्तु की सम्पूर्णता की आवश्यकता है तथा उचित क्रम रूप में व्यवस्थित करना आवश्यक है।

भूगोल के मानचित्रों रेखाचित्रों एवं चित्रों की सुस्पष्टता हेतु GIS एवं रिमोट सेन्सिंग प्रविधि द्वारा प्रस्तुत करना, वर्तमान संदर्भों में अनिवार्य है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

हिन्दी शब्द कोश (1991); अमित स्टूडेन्ट हिन्दी शब्द कोश, डॉ बीएस पण्डित, प्रकाशन स्टूडेन्ट बुक डिपो, नई दिल्ली।

जगमोहन सिंह राजपूत (2002); ''पाठ्यक्रम परिवर्तन के आयाम'' राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद।

जितेन्द्र कुमार, सुनील कुमार, (2014); ''शिक्षा अनुसंधान'', अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

कपिल ए.के (2010); ''अनुसंधान विधियाँ'', एच.पी. भार्गव, बुक डिपो आगरा।

ओम प्रकाश सिंगाठिया (2004); प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम से अपेक्षाएँ, शिविरा पत्रिका, प्रकाशन तिथि 2 मार्च 2014

आर.ए. शर्मा (2009); ''शिक्षा के तकनीकी आधार'', आर. लाल. बुक डिपो, निकट गवर्नमेन्ट, इन्टर कोलेज, मेरठ।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005

एस. के. मंगल, उमा मंगल (1990); ''शिक्षा तकनीकी'', पी.एच..आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, न्यू देहली।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, पाठ्यक्रम विकास।

NCF Position Paper Vol- II (2009); Director Nationa Concil of Educational Research and Training